

---

# Shri Nrisimhashtakam

श्रीनृसिंहाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Nrisimhashtakam 1

File name : nrisimhAShTakam.itx

Category : aShTaka, vishhnu, dashAvatAra, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Transliterated by : N.Balasubramanian

Proofread by : N.Balasubramanian

Latest update : April 24, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 5, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Nrisimhashtakam

---

### श्रीनृसिंहाष्टकम्

---



सुन्दरजामातृमुनेः प्रपद्ये चरणाभ्युजम् ।  
संसारार्णवसंमग्नजन्तुसंतारपोतकम् ॥

श्रीमदकलङ्क परिपूर्णा! शशिकोटि-  
श्रीधर! मनोहर! सटापटल कान्त! ।  
पालय कृपालय! भवाम्बुधि-निमग्नं  
दैत्यवरकाल! नरसिंह! नरसिंह! ॥ १ ॥

पादकमलावनत पातकि-जनानां  
पातकद्वानल! पतत्रिवर-केतो! ।  
भावन! परायण! भवार्तिहरया मां  
पाहि कृपयैव नरसिंह! नरसिंह! ॥ २ ॥

तुङ्गनभ-पङ्क्ति-दलितासुर-वरासृक्  
पङ्क-नवकुङ्कुम-विपङ्किल-मखोरः ।  
पण्डितनिधान-कमलालय नमस्ते  
पङ्कजनिषण्ण! नरसिंह! नरसिंह! ॥ ३ ॥

भौलेषु विभूषणमिवामर वराणां  
योगिदृष्टेषु य शिरस्सु निगमानाम् ।  
राजदरविन्द-रुचिरं पद्युगं ते  
देहि मम मूर्ध्नि नरसिंह! नरसिंह! ॥ ४ ॥

वारिजविलोचन! मदन्तिम-दशायां  
क्लेश-विवशीकृत-समस्त-कराणायाम् ।  
ओलि रमया सल शरण्य! विडगानां  
नाथमधिरुष्य नरसिंह! नरसिंह! ॥ ५ ॥

डाटक-किरीट-वरदार-वनमाला

धारशना-मकरकुण्डल-मणीन्द्रैः ।  
भूषितमशेष-निलयं तव वपुर्मे  
येतसि यकास्तु नरसिंह! नरसिंह! ॥ ६ ॥

छन्दु रवि पावक विलोचन! रमायाः  
मन्दिर! मडामुञ्ज!-लसद्भर-रथाङ्ग! ।  
सुन्दर! चिराय रमतां त्वयि मनो मे  
नन्दित सुरेश! नरसिंह! नरसिंह! ॥ ७ ॥

माधव! मुकुन्द! मधुसूदन! मुरारे!  
वामन! नृसिंह! शरणां भव नतानाम् ।  
कामद घृष्टिन् निभिलकारण नयेयं  
कालममरेश नरसिंह! नरसिंह! ॥ ८ ॥

अष्टकमिदं सकल-पातक-भयघ्नं  
कामदं अशेष-दुरितामय-रिपुघ्नम् ।  
यः पठति सन्ततमशेष-निलयं ते  
गच्छति पदं स नरसिंह! नरसिंह! ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीनृसिंहाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread N.Balasubramanian

---

—  
*Shri Nrisimhashtakam*

pdf was typeset on February 5, 2025

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

